

न्यू जलपाईगुड़ी । जो ट्रेन अलीपुरद्वार और दिल्ली के बीच चलती है, उसका नाम 'महानंदा एक्सप्रेस' है । उत्तर बंगाल की प्रमुख नदी है महानंदा ।

हम इलाहाबाद जा रहे हैं । महानंदा एक्सप्रेस का आगमन दोपहर पौने दो बजे है । यह ट्रेन अकसर देर करती जाती है । बड़ी ट्रेनों को रास्ता देना महानंदा का स्वभाव बन गया है और रुकी हुई ट्रेन से उतरकर प्लेटफॉर्म पर इधर-उधर देखना मेरी फितरत ।

महानंदा प्लेटफॉर्म पर आकर खड़ी हो गई है । कहाँ है ए.सी.टू कोच ? ढूँढते रह जाओगे । टी.टी.ई ए.सी-टू के यात्रियों को ए.सी-श्री में बर्थ दे रहे हैं । वरिष्ठ नागरिक होने के कारण हमें नीचे की बर्थ मिल गई है । यह मेरे लिए राष्ट्रीय पुरस्कार है । काँच की खिड़की के पार मेरा गाँव-देश है और गाँव-देश के बिंब-प्रतिबिंब । मैं ठहरा बिंब-प्रतिबिंबों का एक अदद द्रष्टा ।

ट्रेन न्यू जलपाईगुड़ी से निकल चुकी है और जो केले और अब केले और अनन्नास की मनोरम दृश्यावली के बीच से गुजर रही है । स्वस्थ-प्रसन्न है अनन्नास की खेती लेकिन मुझे प्लेटफॉर्म पर हॉकर ने अनन्नास के टुकड़े दिए थे, वे लगभग कच्चे थे । छल कहाँ नहीं उपस्थित है ?

किशनगंज आ रहा है । बिहार का सीमांत स्टेशन । बंगाल और बिहार की मिलीजुली भाषा और संस्कृति । अदृश्य सरस्वती के रूप में नेपाली भी विद्यमान है । कच्चे-पक्के, घर-झोंपड़े-बाड़ी । बाँस की कोठियाँ । आम-कटहल-केले । कहीं-कहीं सुपारी और नारियल । धान और जूट के खेत । कुछ पोखरों में जूट के बोझ ('पूरे' बुंदेलखंडी में) बेहे गए हैं । माटी-पाथर से दाबकर बोझ को पानी में डुबोया गया है जूट को गलाने के लिए । गलने पर ही रेशे उतरते हैं । रेशे ही तो जूट हैं । सूखने के बाद रेशे के लच्छे और गोले जूट की मिलों में पहुँचते हैं और मिलों से टाट-पट्टियाँ, बोरे-बोरियाँ तथा न जाने कितने आकार-प्रकार में राष्ट्र की देहरी पर उपस्थित होते हैं । दुर्भिक्ष के वक्ष पर चढ़े अन्न के बोरे कितने गौरवशाली लगते हैं ।

मेरे बचपन में गाँव की गड़ही के पानी में ऐसे ही सनई बेही जाती थी । अब न सनई रही न गड़ही रही । गाँव के दुर्दांत ने गड़ही दबोच ली । सन-सुतली की रस्सियाँ स्मृतिशेष हो गईं ।



परिचय

जन्म : १९३८, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

परिचय : डॉ. श्रीकांत उपाध्याय जी सुपरिचित साहित्यकार हैं । आप राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खड़कवासला, पुणे में 'रीडर' के रूप में सेवा दे चुके हैं । आपकी रचनाएँ विविध पत्र-पत्रिकाओं में नियमित छपती रहती हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'ये रहीम दर दर फिरहिं', 'बिनु गोपाल बैरिनि भई कुंजै', 'बागो अनहद तूर', 'दस डिग्री चैनल' आदि ।



गद्य संबंधी

प्रस्तुत यात्रा वर्णन में श्रीकांत जी ने रेल से की गई यात्रा का वर्णन किया है । यात्रा में दिखाई देने वाले सुंदर, प्राकृतिक दृश्यों का मनोहारी वर्णन इस पाठ की विशेषता है ।

मौलिक सृजन

'सड़क दुर्घटनाओं के कारण एवं रोकने के उपाय' पर अपने विचार लिखो ।



संभाषणीय

हेल्मेट पहनने के लाभों के बारे में कक्षा में चर्चा करो।



श्रवणीय



‘बालिका दिवस’ पर मनाए जाने वाले कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि का भाषण सुनते समय भाषा की व्यवस्था, उचित विराम, बलाघात के साथ शुद्ध उच्चारण की ओर ध्यान दो।

जूट के गलने से उसका रंग पानी में उतर आया है। पूरा पोखर कलुआ गया है। ऐसे विषैले पानी में मछलियों को साँस लेने में दिक्कत होती है। वे इच्छामृत्यु माँगती है। साफ-सुथरे पानीवाले पोखरों के किनारे पानी में बंसी डालकर बैठे हैं ध्यानावस्थित लोग। कब मछली कँटिये की डंडी झकझोरे, कब बंसी की डोर मछली को खींचे।

ये वही लोग हैं, जिन्होंने पिछले तीन महीनों में जी-तोड़ मेहनत की है। जोताई, बोआई, रोपाई, निराई। तब कहीं जाकर धान की हरीतिमा लहराती है। अब उन्हें फुरसत मिली है। बंसी लेकर पोखर के किनारे बैठना उनका शौक है। उनका मछली से गहरा नाता है। इस शौक में तन-मन एकाग्र हो जाता है। महानंदाएँ आती-जाती रहें। न कुछ और दिखाई देता है, न कुछ और सुनाई देता है। दीन-दुनिया से बेखबर।

और उधर कालियाचक में क्या हो रहा है ? दूर नहीं है मालदा। प्रसिद्ध है आम के लिए बंगाल का जिला मालदा। उसी जिले का एक उपनगर है-कालियाचक। कालचक्र का तद्भव रूप है-कालियाचक। कितना विद्रूप हो गया है तद्भव।

यह उपनगर बांग्लादेश की सीमारेखा पर अवस्थित है। सीमा रेखा पर बाड़ खड़ी है। बाड़ के दोनों ओर खेत हैं। पुलिस और बी.एस.एफ. है। खेत में मजदूर-किसान काम कर रहे हैं। किंशनगंज के बाद परिदृश्य बदल जाता है। उत्तर बिहार का वह विस्तृत भूभाग आरंभ होता है, जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी विनाशलीला करता है। जहाँ तक देख पा रहा हूँ-पानी-ही-पानी। पेड़-रूख पानी में। घर-द्वार पानी में। कहाँ गए लोग ? कहाँ गए पशु-पक्षी ? बाढ़ तो एक महीने पहले आई थी, लेकिन अभी भी पानी उतरा नहीं है। भौगोलिक दृष्टि से उत्तर बिहार का यह अंचल धँसा हुआ है। प्रतिवर्ष हवाई सर्वेक्षण।

ऊँची जमीन की विशद पट्टी पर रेलवे लाइन बिछी हुई है। महानंदा पानी के आक्षितिज विस्तार के बीच चली जा रही है। कुछ स्टेशनों के करीब राहत शिविर लगे हुए हैं। जनसंख्या विस्फोटक बच्चे खेल-कूद रहे हैं। सर्वहारा परिवार की एक स्त्री शिविर के द्वार पर बैठी दर्पण के सामने केश विन्यास कर रही है।

बिहार का शोक-ओ कोसी ! अगर श्मशान भूमि में भी शिविर लगा दिया जाए तो भी वह विस्थापित परिवार की कुलवधू मसान की पीठ पर बैठकर वेणी संहार करेगी।

इधर बाढ़ में डूबा बिहार पानी से मुक्ति चाहता है, उधर महाराष्ट्र का मराठवाड़ा और उत्तर प्रदेश का बुंदेलखंड परम वृष्टि पाकर निहाल हो रहे हैं। कटिहार के बाद भू-दृश्य फिर बदलता है। बाढ़ के दृश्य अब

नहीं दिख रहे हैं। शाम का धुँधलका उतर रहा है।

बिहार रात की बाँहों में और मैं निद्रा के अनंत में।

सवेरा हो गया है। दक्षिण बिहार की धान मेखला रात में आई और चली गई। मुगलसराय पीछे छूट गया है। महानंदा चुनार-मिरजापुर क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है।

कहाँ हैं देवकीनंदन खत्री के उपन्यास-चंद्रकांता और चंद्रकांता संतति में वर्णित वे रहस्यमय जंगल और खोह-कंदराएँ? रेलवे लाइन के आस-पास कुछ जंगली पेड़, कटी-पिटी जमीन और नदी-नाले के पार्श्व में रहने वाले सरपत अवश्य दिख रहे हैं। ये प्रतीक हैं जंगल के, नदी-नाले के। अब हम प्रकृति को प्रतीकों में देखा करेंगे।

पानी में प्रसन्नचित्त खड़े हैं धान। नीचे रेलवे लाइन के किनारे वर्षा ऋतु ने जगह-जगह जलाशय बना दिए हैं। कुई से समन्वित हैं ये जलाशय। अचानक एक जलाशय दृष्टि-पथ में आता है और अपनी संपूर्ण दिव्यता के साथ मेरे मानस-फलक पर अंकित हो जाता है। नहीं मिटेगी जन्म-जन्मांतर तक वह छवि।

जलाशय का पानी उज्ज्वल नीलमणि-सा दमक रहा है। अपने-अपने मृणाल पर प्रार्थनामय मुद्रा में, पानी में खड़ी हैं कुमुदिनियाँ। खिली-अधखिली-अनखिली। पानी पर ठहरे हैं कुमुदिनी-पत्र। पानी के अरण्य में विहार कर रही हैं नन्हीं-नन्हीं मछलियाँ।

जलाशय के किनारे छिछले पानी में खड़ी है एक घास-नरई। इसमें न कोई गाँठ, न कोई पत्ता। भीतर से पूरी तरह खाली-खोखली। एक नरम शलाका सूर्योन्मुखी।

कोई देखे, न देखे। कोई चीन्हे, न चीन्हे। कोई जाने, न जाने। सृष्टिकर्ता तो देखता है। सिरजनहार तो चीन्हता है। प्रतिपालक तो जानता है। शायद गंगा पार काशी के मध्यकालीन संत ने नरई के किसी पूर्वज को कहीं देखा था और एक कालजयी साखी रच दी-

सतगंठी कौपीन दै, साधु न मानै संक।

राम अमलि माता रहै, गिनै इंद्र कौ रंक ॥

भस्मस्नात देह पर सात गाँठों से गठा कौपीन धारण कर साधु जब भागीरथी के तट पर सूर्योदय-सा खड़ा होता है, तो वह जीवन और जगत् का महानायक हो जाता है, जिसका तेज-प्रताप देखकर पंचमहाभूत-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश रोमांचित हो उठते हैं।

— ० —

लेखनीय



पठित पाठों के कठिन शब्दों का द्विभाषी शब्दकोश तैयार करो।



पठनीय

प्रसार माध्यमों में प्रकाशित जानकारी की आलंकारिक शब्दावली का प्रभावपूर्ण तथा सहज वाचन करो। जैसे-विज्ञापन आदि।

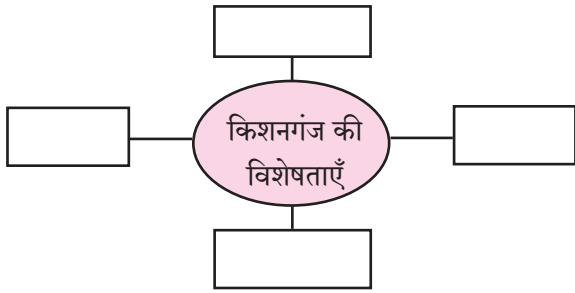
शब्द संसार

सनई = छोटा पौधा जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है
गड़ही = छोटा गड़ढा
दुर्दात = बेकाबू
द्रष्टा = दूर दृष्टि वाला
दुर्भिक्ष = अकाल, अभाव

सरपट = सरकंडा
अवस्थित = टिका हुआ, ठहरा हुआ
मृणाल = कमल की जड़
कौपीन = लँगोटी
मुहावरा
निहाल होना = आनंदित होना

* सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) संजाल पूर्ण करो :



(३) पाठ में प्रयुक्त खेती से संबंधित शब्द :

१. _____
२. _____
३. _____
४. _____

(२) विधानों का सही/गलत वर्गीकरण करो :

१. बंगाल का जिला मालदा आम के लिए प्रसिद्ध है ।
२. शाम का धुँधलका उतर रहा है ।
३. पानी में खड़े हैं प्रसन्नचित्त मछुआरे !
४. जलाशय का पानी उज्ज्वल नीलमणि-सा महक रहा है ।

(४) उत्तर लिखो :

१. लेखक ने इस ट्रेन से यात्रा की -----
२. उत्तर बंगाल की प्रमुख नदी -----
३. ऐसे पानी में मछलियों को साँस लेने में दिक्कत होती है -----

सदैव ध्यान में रखो

प्राकृतिक सुंदरता बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी है ।

भाषा बिंदु

पाठों में आए दस वाक्य (रचना के अनुसार) ढूँढ़कर लिखो ।

उपयोजित लेखन

सुवचन के आधार पर कहानी लिखो और उसे उचित शीर्षक दो :
'बहाने नहीं सफलता के रास्ते खोजो !'



मैंने समझा



स्वयं अध्ययन

साइकिल का उपयोग और उसकी आवश्यकता संबंधी अपने विचार लिखो ।